सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष 2021 का चतुर्थ अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इस अंक में प्रथम लेख के रूप में देवर्षि कलानाथ शास्त्री जी का 'द्वितीय पुरुषार्थ-अर्थ' लेख समाहित है तथा पण्डित अनन्त शर्मा का 'पण्डित मधुसूदन ओझा का गीता विषयक चिन्तन' लेख है। इसी क्रम में 'पाकदर्पणम्' भारतीय पाकशास्त्र का अद्भुत निदर्शन लेख में लेखक डॉ. समयसिंह मीना ने पाकविद्याविषय प्राचीन भारतीय ज्ञानगरिमा का प्रस्तुतीकरण किया है। महासिंह सोढा द्वारा लिखित 'रसकपूर उपन्यास का व्युत्पत्ति परिशीलन' जयपुरीय विद्वान पं. मोहनलाल पाण्डेय के प्रतिभा एवं पाण्डित्य को आलोकित करता है। आचार्य माधव शास्त्री ने 'मनु और समय' लेख में समय के विविध घटक बतलाये हैं। रघुनन्दन शर्मा का 'ज्योतिषशास्त्रे नक्षत्राधारेण नेत्ररोगविचारः' लेख नक्षत्रविद्या के माध्यम से नेत्ररोगों की जानकारी प्रस्तुत करता है। 'स्वामी श्री दादूजी का अवतरण' लेख में डॉ. दयाराम स्वामी ने दादू जी के अवतरण विषयक मतों के साथ सम्प्रदाय की मान्यता के प्रामाण्य को प्रस्तुत करने की चेष्टा की है। अन्त में डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर के 'राष्ट्रोपनिषत् प्रस्तावना शतकम्' के कतिपय पद्य प्रकाशित किये गये हैं, जो गुरुशिष्यपरम्परा के गौरव को प्रदर्शित करने के साथ साथ आत्मचिन्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्वक हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

सम्पादक

डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा